Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 8 | April 2015

ISSN:- 2393-8900

Research Article

संत साहित्य की प्रासंगिकता

घाडगे काकासाहेब भानुदास

हिंदी विभाग प्रमुख , विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला , जिला. सोलापुर.

सारांश :

आज सारे संसार में हिंसा, घृणा, अहंकार, जातीय वैमनस्य, द्वेष भरा है । इससे बहुत से परिवार टूट चुके हैं । दीन-दुखियों के आक्रोश से आसमान गुंज रहा है । चारों तरफ अमानवीयता दिखायी देती है । संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता का ऱ्हास हो रहा है। जातिधर्म के नाम पर मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव बड रहा है । ऐसी परिस्थिती में संत साहित्य ही मानव के लिए सही दिशा दे सकता है; क्योंकि संत साहित्य मानवतावादी आदर्श साहित्य है । वह युगो-युगों तक मानव का पथ-प्रदर्शन कर सकता है । कबीर, रैदास, नानकदेव, दादू दयाल, जायसी, तुलसी, सूरदास आदि के साहित्य में मानवता के दर्शन होते है ।

प्रस्तावना :

मानवतावादी साहित्य –

संत काव्य परंपरा में कबीरदास का स्थान सर्वोपरि है । उन्होने अपने साहित्य के माध्यम से धर्म को अन्धविश्वास और आडम्बर से मुक्त करने का प्रयास किया है । हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए अजिवन प्रयास किया है । वे न हिंदू को अपनाते न मुसलमान को वे सभी को समान मानते थे । उनके साहित्य में मानवतावाद के दर्शन होते है ।

कबीर के काव्य का आधार स्वानुभूति या यथार्थ है । उन्होंने स्पष्ट रूप से हा है -''में कहता हूँ आंखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी ।'' [१] वे जाँति-पाँति और ऊँच-नीच के भेदभाव को नहीं मानते थे - ''जाँति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई ।''

संत कबीर ने मूर्तिपूजा, धर्म के नाम पर की जानेवाली हिंसा, तीर्थ-व्रत, रोजा, आदि का विरोध किया है । वे जन्म से समाज सुधारक, प्रगतिशील दार्शनिक और क्रांतिकारी कवि थे ।

सामाजिक भावना से परिपूर्ण साहित्य–

संत साहित्य में रैदास अथवा रविदास का विशेष स्थान है । निम्न वर्ग में उत्पन्न होकर भी उत्कृष्ट साधना पध्दति तथा सुंदर आचरण के कारण वे आज भी भारतीय धर्म साधना के इतिहास में चर्चित है । वे वर्ण व्यवस्था के खिलाफ थे -

जात-पाँत फेर मंहि, उरझि रहइ सब लोग ।
मानुषता कूरवात हइ, रविदास जात कर रोग ।।

रविदास ब्राम्हण और चांडाल को एक समान मानते थे । वे सारे संसार में सामाजिकता की भावना लाकर समाज को एक दृष्टि से देखना चाहते है । अतः उनके साहित्य में सामाजिक एकता दिखायी देती है

सीधे–साधे उपदेश का साहित्य–

संत साहित्य में नानकदेव के सीधे-साधे उपदेश है । सिख मत के प्रवर्तक गुरू नानक देव पंजाबी, हिंदी, फारसी और संस्कृत के पंडित थे । नानक ने अनेक पदों की रचना की है जो 'ग्रंथसाहिबा' में संकलित है । उनके काव्य में अवतारवाद, मूर्तिपूजा एवं ऊँच-नीच का विरोध है । हिंदू-मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करनेवाले तथा ब्रम्हा की प्राप्ति करने के लिए उन्होंने सीधे-सीधे लेकिन मार्मिक उपदेश दिए है ।

प्रतिभाशाली साहित्य :–

संत साहित्य प्रतिभाशाली साहित्य है । संत दादू दयाल धर्म-सुधारक समाज-सुधारक और रहस्यवादी कवि थे । दादू जाति के मूसलमान थे । उनके स्वभाव में सरलता, त्याग, क्षमाशील आदि गुण विद्यमान थे । दादू प्रतिभाशाली कवि थे उनकी वाणी में ओज तथा गांर्भीय दोनों के दर्शन हो जाते है –

''दादू पद जोडे क्या पाईये, साषी कहें का होइ ।
सति सिरोमनि साईयां, तत न चीन्हां सोइ ।
पोथी अपना प्यंड करि, हरि जस मोहे लेष ।
पंडित अपणां प्राण करि, दादू कथौ अलेष ।
असत मिलइ अंतर पडइ, भाव भगति रस जाइ ।
साध मिलई सुख उपजई, आनंद अंग नवाइ ।।''[२]

प्रेमाख्यान साहित्य–

संत साहित्य प्रेमाख्यान साहित्य है । संत जायसी ने भी स्त्री-पुरूष प्रेम को ईश्वर प्रेम का प्रतिक मानकर प्रस्तुत किया हुआ सुफी प्रेमाख्यान काव्य हिंदी संत साहित्य की अन्यन्य विभूति है । ईश्वर और मनुष्य के प्रेम के समान स्त्री-पुरूष प्रेम को दिव्यासिध्द करने का व्यापक प्रयास संत जायसी ने किया है ।

रत्नसेन और पद्मावती की लौकिक प्रेम कहानी के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है ।

आदर्श साहित्य–

संत साहित्य आदर्श साहित्य है । गोस्वामी तुलसीदास की भक्तिभावना मूलतः लोकसंग्रह से अभिप्रेत है । मानस में रामकथा का संगोपांग वर्णन है । रामकाव्य का आदर्श पक्ष अत्यंत उच्च है। राम आदर्श पुत्र, राजा तथा पति है । सीता आदर्श पत्नी है । कौशल्या आदर्श माता, लक्ष्मण तथा भरत आदर्श भाई, हनुमान आदर्श सेवक, तथा सुग्रीव आदर्श सखा है । रामकाव्य व्यापक है। व्यापकता के कारण जीवन की विविधताओं का उसमें सहज समावेश है । अतः संत तुलसी का रामकाव्य आदर्श साहित्य है ।

वात्सल्य से ओतप्रोत साहित्य–

संत साहित्य वात्सल्य से ओतप्रोत साहित्य है । सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है । संत सूरदास का साहित्य वात्सल्य भाव से ओत प्रोत है । बालक की विविध चेष्टाओं और विनोदी के क्रिडास्थल मातृ हृदय की अभिलाषाओं और भावनाओं के वर्णन में सूरदास अनूठे है । कृष्ण जन्म के उपरान्त नंद के घर बराबर आनंदोत्सव हो रहा है –

''नंद जू मेरे मन आनंद भयो, हौं गोवर्धन तें आयो ।
तुम्हारे पुत्र भयो, मैं सुंनि कै अति आतुर उठि छायों ।।[३]

निष्कर्ष :–

संत कबीर, रैदास, नानकदेव, दादू दयाल, जायसी, तुलसी, सूरदास आदि के साहित्य में मानवता सामाजिक भावना, सीधे, साधे उपदेश प्रतिभा शालीनता, आदर्श वात्सल्य आदि के दर्शन होते है । साथ ही संत साहित्य से हमें भारतीय संस्कृति के दर्शन निन्मवर्ग के प्रति करूणा, हिंदू-मुस्लिम एकता, अहिंसा, बंधुप्रेम, भगवान के प्रति भक्ति आदि विचारों की पूर्ति होती है । २१ वी सदी में संत साहित्य ही हमारा पथ-प्रदर्शन कर

सकता है । मानव के बीच का अहंकार भी संत साहित्य से ही नष्ट हो सकता है । मेरे विचार से संत साहित्य ही श्रेष्ठ साहित्य और अमर साहित्य है। जो जीवन मूल्यों की सीख देता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :–

१) डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल- हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. १२०
२) डॉ. नगेंद्र- हिंदी साहित्य का इतिहास - पृष्ठ-१३५
३) आ. रामचंद्र शुक्ल- हिंदी साहित्य का इतिहास- पृष्ठ-६३